



सम्पादकीय

नई कल्पना, रंग-रूप नव, नये स्वरूप का नव स्पन्दन,
नये दौर की नई ट्रेन का हम करते हैं अभिनंदन !

प्रिय पाठको,

हम सभी जानते हैं कि परिवर्तन सृष्टि का नियम है और इसका पालन हम सभी को करना पड़ता है। जिस तरह प्रकृति की ऋतुएँ और मौसम बदलते रहते हैं और हर दिन के बाद रात और फिर अगले दिन सुबह का सूरज उगता है, उसी तरह मानव सभ्यता भी परिवर्तन के पहलू से अछूती नहीं है। प्रकृति के ही अनुरूप मनुष्य की प्रवृत्ति भी बदलती है तथा सृष्टि की अवस्था के मुताबिक समाज की व्यवस्था भी परिवर्तन के दौर से गुजरती है, जिसके फलस्वरूप नव चेतना का जोशीला एहसास होता है और समूची व्यवस्था नये उत्साह से सराबोर हो जाती है। हमारी रेल प्रणाली भी समय-समय पर कुछ ऐसे ही परिवर्तनों के दौर से गुजरती है, जिसके परिणामस्वरूप नई ट्रेनों और नई सुविधाओं का खुशनुमा आगाज होता है। इसी क्रम में नवीनतम बदलाव के तौर पर रोजाना लाखों मुंबईकरों को उनकी मंजिलों तक पहुँचाने वाली पश्चिम रेलवे की उपनगरीय रेल प्रणाली के अंतर्गत दो बिल्कुल नये-नवेले ईएमयू रैक प्राप्त हुए हैं, जिनके परिचालन का परीक्षण किया जा रहा है और निकट भविष्य में ये रैक नई लोकल ट्रेनों के तौर पर मुंबई की पटरियों पर दौड़ने लगेंगे। 'रेल दर्पण' के नवीनतम अंक में हमने इसी नये ईएमयू रैक को मुखपृष्ठ की संकल्पना का प्रमुख आधार बनाया है, ताकि हमारे पाठकों के अंतर्मुख तक नये दौर की इस नई आकर्षक ट्रेन का खुशनुमा स्पन्दन पहुँच सके। कुछ अपरिहार्य कारणोंवश 'रेल दर्पण' का यह अंक हम देरी से प्रकाशित कर पाये हैं, लेकिन हमें विश्वास है कि इस नये अंक के लिए आपका इंतजार सार्थक सिद्ध होगा और आप अपनी प्रिय पत्रिका के नये अंक को पिछले अंकों से कहीं अधिक बेहतर और पठनीय पायेंगे। 'रेल दर्पण' के इस नये अंक में नये ईएमयू रैक के आवरण पृष्ठ के अलावा काफी कुछ नया है। सबसे सुखद नवीनता के प्रतीक हैं हमारे नये महाप्रबंधक और पश्चिम रेल परिवार के मुखिया श्री हेमन्त कुमार, जिनके महत्वपूर्ण शुभकामना संदेश से हुआ है नये अंक का श्री गणेश, जिसके लिए हम उनके हार्दिक आभारी हैं। नये महाप्रबंधक महोदय के साथ हमने प्रधान विभागाध्यक्षों के तौर पर पिछले दिनों कार्यभार ग्रहण करने वाले हमारे नये प्रशासकों का सचित्र परिचय प्रकाशित कर सभी का हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन किया है।

इस अंक में महाप्रबंधक महोदय के विशेष लेख में पश्चिम रेलवे के बुलंद इरादों के सफ़र की सार्थक बानगी पेश की गई है, वहीं मुंबई में पश्चिम रेल नेटवर्क के 150 वें वर्ष के उपलक्ष्य में प्रकाशित विशेष लेख में आप पढ़ पायेंगे 'कपास' के जरिये मुंबई में 150 वर्ष पूर्व हुए रेल नेटवर्क के विकास की अनूठी दास्तान, जिसके साथ छपे विभिन्न दुर्लभ छायाचित्र भी आपको जरूर लुभायेंगे। सामयिक गतिविधियाँ, स्वास्थ्य चर्चा, कथाकुंज, व्यंग्य वीथिका, अभिनंदन के हकदार, सांस्कृतिक हलचल, सुडोकू, वैचारिकी, काव्यात्मक अभिव्यक्ति, खेल-खिलाड़ी, जिंदादिली और उल्लास के हरकारे, पाठक-पीठिका, मंडलों के अंचलों से जैसे हमारे सभी लोकप्रिय स्तम्भ हमने नये अंक में भी नई साज-सज्जा के साथ जारी रखे हैं, वहीं विशेष फोटो फीचर के अंतर्गत इस बार हमने रेलवे की स्टील स्क्रैप सामग्री से पश्चिम रेलवे के मुख्य परिचालन प्रबंधक श्री रवीन्द्र कुमार टंडन के कलात्मक निर्देशन में तैयार की गई यादगार हेरिटेज सामग्री का सचित्र प्रदर्शन किया है, जो अपने आप में बेमिसाल है। इसी अध्याय के अंतर्गत हमने पश्चिम रेलवे द्वारा आयोजित पिछली दो महत्वपूर्ण प्रदर्शनियों की झलक भी पेश की है, जिसे अपलक निहारा जा सकता है। 'सखियों का संसार' स्तम्भ में हमने जहाँ पश्चिम रेलवे महिला समाज सेवा समिति की नई अध्यक्षा के स्वागत समारोह और समिति की प्रमुख समाजोपयोगी गतिविधियों को दर्शाया है, वहीं इस बार 'स्वाद जो रहे याद' में हमने आपके लिए सिर्फ एक नहीं, बल्कि तीन नई नवेली फूड डिशेज का जायका परोसा है। इसी तरह हमारे सर्वाधिक लोकप्रिय स्तम्भ 'विशेष अतिथि रचनाकार' में इस बार खास तौर पर शिरकत की है, गुजरे जमाने के मशहूर गीतकार श्री नक्श लायलपुरी जी ने, जिनके कई सुपर-डुपर हिट नगमे आज भी बड़ी शिद्दत और मोहब्बत से गुनगुनाये जाते हैं। अंग्रेजी खंड के लोकप्रिय स्तम्भ 'स्पेशल इंटरव्यू' में भी इस बार हमने अपने पाठकों को 'डबल बोनान्ज़ा' दिया है, जिसके जरिये आप मशहूर अभिनेताओं श्री सन्नी देओल और श्री रमेश देव से वैचारिक मुलाकात कर पायेंगे।

हमें खुशी है कि वर्ष 2011 में माननीया राष्ट्रपति महोदय के हाथों देश की सर्वश्रेष्ठ गृह पत्रिका का प्रतिष्ठित सम्मान पाने वाली आपकी प्रिय पत्रिका 'रेल दर्पण' ने उत्कृष्टता के शिखर पर बने रहने की कठिन चुनौती को न सिर्फ बखूबी स्वीकारा है, बल्कि अपनी उपलब्धियों का सिलसिला लगातार जारी रखकर अपनी सृजनात्मक श्रेष्ठता को निरंतर साबित भी किया है। पिछले 10 वर्षों की सफलता को जारी रखते हुए इस गृह पत्रिका ने 'एसोसिएशन ऑफ बिज़नेस कम्युनिकेटर्स ऑफ इंडिया' (एबीसीआई) द्वारा व्यावसायिक संचार के क्षेत्र में सृजनात्मक उत्कृष्टता के लिए प्रति वर्ष दिये जाने वाले प्रतिष्ठित पुरस्कारों के क्रम में वर्ष 2013 में भी दो राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर एक बार फिर अपनी शानदार गुणवत्ता सिद्ध की है। इनके अलावा देश की सुप्रसिद्ध साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्था 'शैलजा नायर फाउन्डेशन' द्वारा वर्ष 2013 के लिए प्रदान किये गये दो आइस 'इनहाउस क्रिएटिव एक्सेलेंस' पुरस्कार 'रेल दर्पण' की अच्छी गुणवत्ता के लिए प्राप्त करना भी हम सबके लिए एक बड़ी उपलब्धि रही है। इस उपलक्ष्य में सभी नियमित लेखकों, प्रबुद्ध पाठकों, सम्पादक मंडल के सभी सदस्यों और हमारे तमाम शुभचिंतकों का हम हार्दिक अभिनंदन करते हैं और सभी के अमूल्य सहयोग के लिए तहे दिल से शुक्रिया अदा करते हैं।

पश्चिम रेल संगठन की उपयोगी जानकारी और सुरुचिपूर्ण सृजनात्मकता से सराबोर सामग्री का रंगबिरंगा गुलदस्ता 'रेल दर्पण' के इस नवीनतम अंक के रूप में आपके हाथों में पहुँच चुका है। अब इसकी गुणवत्ता का फैसला आपको अपनी प्रतिक्रियाओं के जरिये सुनाना है। इसलिए, हमें इंतजार रहेगा आपके अपनत्व से भरे पैगामों का...!

अंत में आप सभी को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

आपका शुभाकांक्षी,

शरत

(शरत चंद्रायन)

प्रधान सम्पादक एवं
मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी